॥ ओ३म् ॥

वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 20 अंक : 4 25 फरवरी 2020 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

महाशिवरात्रि पर वाम मार्ग का तांडव नृत्य

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिव का अस्तित्व ही नहीं

जयपुर। जब मूल जी की अवस्था 13 वर्ष की थी तो उनके पिता ने उन्हें शिवरात्रि का व्रत ग्रहण करने का आदेश दिया। इस व्रत ग्रहण में क्लेश और कठोरता सहन करनी होती है इसलिए उसमें मूल की माता जी ने आपत्ति की तथा अभिभावक व बन्धुवर ने भी उनका विरोध किया परंतु मूलशंकर के पिताजी करसन जी नहीं माने और अपने पुत्र से कहा कि तुम आज उपवास रखना, शिवालय में जाकर रात्रि में जागरण करना क्योंकि आज तुम्हें पवित्र शैव धर्म की दीक्षा लेनी होगी। शिवरात्रि को चार प्रहर में चार बार शिव जी की पूजा करनी होती है। जिस समय मूल जी की दूसरे प्रहर की पूजा समाप्त हुई तब उन्होंने देखा कि मंदिर के पुजारी और मंदिर में आये व्रतधारी मंदिर के बाहर जाकर सो रहे हैं यहां तक कि उनके पिता जी भी निद्रा के वशीभूत हो गए परंतु मूल जी न सो सके क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि व्रतधारी के लिए शिवरात्रि में सोना बहुत ही निन्दनीय है और निद्रा के कारण व्रत का भंग करना महापाप है। मूलशंकर नहीं सोए और शिव की मूर्ति को देखते रहे। मूलशंकर लिखते हैं कि जब मैं मंदिर में इस प्रकार अकेला जाग रहा था कि एक घटना उपस्थित हुई। कई चूहें बाहर निकलकर महादेव की पिंडी के ऊपर दौड़ने लगे और बीच-बीच में महादेव पर जो चावल चढ़ाएं गए थे उन्हें भक्षण करने लगे। देखते-देखते मेरे मन में यह विचार आया कि जिस महादेव की शांत पवित्र मूर्ति की कथा, जिस महादेव की प्रचंड पाशुपतास्त्र की कथा और जिस महादेव के विशाल दृषारोहण की कथा गत दिवस व्रत के वृतान्त में सुनी थी क्या वह महादेव वास्तव में यही है। इस प्रकार मैं चिंता से विचलित चित्त हो उठा और उनका मूर्ति पूजा से विश्वास उठ गया। उन्होंने निर्णय लिया कि मैं सच्चे शिव की तलाश करूंगा और सन् 1846 ईस्वी में किसी से कुछ न कहकर सदा के लिए गृह त्याग किया। करसन जी का व्यवहार विवाह की तैयारी के कारण आनन्द से परिपूर्ण हो रहा था वह अब विशाद और शोक में डूब गया।

सच्चे शिव की तलाश में 11 वर्ष तक (1846 से 1857) मूलशंकर वन, पर्वतों में भटकता रहा। अंत में 1857 में दण्डी विरजानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया और तीन वर्ष तक आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। जब दयानन्द गुरु विरजानन्द के पास विदा होने को गए तो गुरुदेव ने प्रेम के साथ कहा 'सौम्य! मैं तुमसे किसी प्रकार के धन की दक्षिणा नही चाहता हूँ। मैं तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने दिन जीवित रहोगे उतने दिन आर्यावर्त में आर्ष ग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे। अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करोगे और भारत में

वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे।' दयानन्द ने इसके उत्तर में केवल एक शब्द कहा- 'तथास्तु'। यह कहकर गुरुदेव के चरणों में प्रणत हो गए और फिर उन्होंने मथुरा से प्रस्थान कर दिया।

दयानन्द ने गुरु की आज्ञा के सामने सिर झुका दिया। कुछ इतस्तत: नहीं किया, कोई आपत्ति खड़ी नहीं की, कोई बहाना नहीं ढूँढ़ा। उत्तर देने के लिए कोई समय नहीं माँगा। हमें कहीं दो पैसे भी देने होते हैं तो देने से पहले बीस बातें सोचते हैं। गुरु विरजानन्द शिष्य दयानन्द से जीवन माँगते हैं और शिष्य नि:संकोच होकर उसे अर्पण कर देता है। कैसी गुरुभक्ति है? कैसी अनन्य-साधारण उदारता है? कौन कह सकता है कि दयानन्द ने अपने जीवन का उद्देश्य क्या सोचा था? कौन जाने इतना ज्ञानोपार्जन और इतना योगसाधन करने के पश्चात् वे अपने जीवन का लक्ष्य क्या बनाना चाहते थे? उन्होंने इस पर कितना सूक्ष्म विचार किया होगा, क्या-क्या सोचा होगा? वह सब-कुछ निष्फल हो गया और एक क्षण में गुरु के आदेश से उनका जीवन-लक्ष्य सदा के लिए स्थिर हो गया।

मूलशंकर ने गृह त्याग किया था सच्चे शिव की तलाश में। सच्चे शिव की तलाश करते हुए वे वेद के विशाल वारिधि में प्रवेश कर गए। उस वारिधि में उन्होंने देखा कि वेद में तृण से लेकर ईश्वर तक का ज्ञान है। यही ईश्वर वाणी है। सृष्टि के आरम्भ में परमपिता परमेश्वर ने प्राणि मात्र के कल्याण के लिए यह ज्ञान दिया था और भारत विश्वगुरु था परंतु महाभारत काल के बाद वैदिक धर्म लुप्त होता गया और आज वैदिक धर्म के नाम पर पौराणिक धर्म का वर्चस्व है।

मूलशंकर संन्यासी हो गए और उनका नाम मूलशंकर से दयानन्द हो गया। महर्षि ने पुराणों का जबर्दस्त खण्डन किया और कहा कि पुराणों में बहुत सी बातें झूठी हैं और कोई घुणाक्षरन्याय से सच्ची भी है। जो सच्ची है, वह वेदादि सत्यशास्त्रों की, और जो झूठी हैं, वे इन पोपों के पुराणरूप घर की हैं। जैसे शिवपुराण में शैवों ने शिव को परमेश्वर मानके विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, गणेश और सूर्य्यादि को उनके दास ठहराये। वैष्णवों ने विष्णु पुराण आदि में विष्णु को परमात्मा माना और शिव आदि को विष्णु के दास। देवी भागवत में देवी को परमेश्वरी और शिव, विष्णु आदि को उसके किङ्कर बनाये। गणेश खण्ड में गणेश को ईश्वर और शेष सबको दास बनाये। भला यह बात इन सम्प्रदायी लोगों की नहीं तो किनकी है? एक मनुष्य के बनाने में ऐसी परस्पर विरुद्ध बात नहीं होती तो विद्वान के बनाये में कभी नहीं आ सकती। इसमें एक बात को सच्ची मानें तो दूसरी झूठी और जो दूसरी को सच्ची मानें तो तीसरी झूठी, और जो तीसरी को सच्ची मानें तो अन्य सब झूठी होती हैं। शिवपुराण वाले शिव से, विष्णु पुराण वालों ने विष्णु से, देवी पुराण वाले ने देवी से, गणेश खंड वाले ने गणेश से, सूर्य्य पुराण वाले ने सूर्य्य से और वायुपुराण वाले ने वायु से सृष्टि की उत्पत्ति-प्रलय लिख के पुन: एक-एक से एक-एक जो जगत् के कारण लिखे, उनकी उत्पत्ति एक-एक से लिखी। कोई पूछे जो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करने वाला है, वह उत्पन्न और जो उत्पन्न होता है, वह सृष्टि का कारण कभी हो सकता है वा नहीं? तो केवल चुप रहने के सिवाय कुछ भी नहीं कह सकते और इन सब के शरीर की उत्पत्ति भी इसी से हुई होगी, फिर वे आप सृष्टिपदार्थ और परिच्छिन्न होकर संसार की उत्पत्ति के कर्त्ता क्यों कर हो सकते हैं? और उत्पत्ति भी विलक्षण 2 प्रकार से

मानी है, जो कि सर्वथा असंभव है।

भागवत के सम्बन्ध में महर्षि ने कहा कि भागवत बोबदेव का बनाया हुआ है जिसके भाई जयदेव ने गीतगोविन्द बनाया है। उसने यह श्लोक अपने बनाए हिमाद्रि नामक ग्रन्थ में लिखे है कि श्रीमद्भागवत पुराण मैंने बनाया है।

भागवत की आलोचना करते हुए महर्षि ने लिखा है कि भागवत में विष्णु की नाभि से कमल, कमल से ब्रह्मा और ब्रह्मा के दाहिने पग के अँगूठे से स्वायंभुव और बायें अँगूठे से सत्यरूपा राणी, ललाट से रुद्र और मरीचि आदि दश पुत्र, उन से दक्ष प्रजापति उनकी तेरह लड़कियों का विवाह कश्यप से, उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव, अदिति से आदित्य, विनता से पक्षी, कद्रू से सर्प्प, सरमा से कुत्ते, स्याल आदि और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊँट, गधा, भैंसा, घास-फूस और बबूर आदि वृक्ष काँटे सहित उत्पन्न हो गये। वाहरे वाह! भागवत के बनाने वाले लाल भुजक्कड़! क्या कहना तुझको ऐसी मिथ्या बातें लिखने में तनिक भी लज्जा और शर्म न आई? निपट अंधा ही बन गया। स्त्री पुरुष के रज-वीर्य्य के संयोग से मनुष्य तो बनते ही हैं, परंतु परमेश्वर की सृष्टिक्रम के विरुद्ध पशु-पक्षी सर्प आदि कभी उत्पन्न नहीं हो सकते। और हाथी, ऊँट, सिंह, कुत्ता, गधा और वृक्षादि का स्त्री के गर्भाशय में स्थित होने का अवकाश कहाँ हो सकता है? और सिंह आदि उत्पन्न होकर अपने माँ-बाप को क्यों न खा गये? और मनुष्य शरीर से पशु, पक्षी, वृक्षादि का उत्पन्न होना क्यों कर संभव हो सकता है? शोक है, इन लोगों की रची हुई इस महा असंभव लीला पर, जिसने संसार को अभी तक भ्रमा रखा है। भला इन महा झूठ बातों को वे अंधे पोप और बाहर-भीतर की फूटी आँखों वाले उनके चेले सुनते और मानते हैं, बड़े ही आश्चर्य की बात है कि ये मनुष्य है वा अन्य कोई!!! इन भागवतादि पुराणों के बनाने हारे जन्मते ही क्यों नहीं गर्भ ही में नष्ट हो गये? वा जन्मते समय मर क्यों न गये? क्योंकि इन पापों से बचते तो आर्यावर्त्त देश दु:खों से बच जाता।

शैव मत पर आक्रमण करते हुए महर्षि ने लिखा कि जैसा प्रेतनाथ वैसा भूतनाथ। जैसे वाममार्गी मंत्रोपदेशादि से उनका धन हरते हैं, वैसे शैव भी "ओं नम: शिवाय" इत्यादि पञ्चाक्षरादि मंत्रों का उपदेश करते, रुद्राक्ष भस्मधारण करते, मट्टी के और पाषाणादि के लिङ्ग बना कर पूजते हैं और हर-हर बं बं और बकरे के शब्द के समान बड़, बड़, बड़ मुख से शब्द करते हैं उसका कारण यह कहते हैं कि ताली बजाने और बं बं शब्द बोलने से पार्वती प्रसन्न और महादेव अप्रसन्न होता है, क्योंकि जब भस्मासुर के आगे से महादेव भागे थे, तब बं बं और ठट्ठे की तालियां बजी थीं और गाल बजाने से पार्वती अप्रसन्न और महादेव प्रसन्न होते हैं, क्योंकि पार्वती के पिता दक्ष प्रजापति का शिर काट आगी में डाल उसके धड़ पर बकरे का शिर लगा दिया था, उसी की नकल बकरे के शब्द के तुल्य गाल बजाना मानते हैं। शिवरात्रि प्रदोष का व्रत करते हैं, इत्यादि से मुक्ति मानते हैं। इसलिये जैसे वाममार्गी भ्रान्त हैं, वैसे शैव भी। इनमें विशेष कर कनफटे, नाथ, गिरी, पुरी, बन, आरण्य, पर्वत और सागर तथा गृहस्थ भी शैव होते हैं। कोई कोई "दोनों घोड़ों पर चढ़ते हैं" अर्थात् वाम और शैव दोनों मतों को मानते हैं और कितने ही वैष्णव भी रहते हैं।

वेद विरुद्ध अनार्ष ग्रन्थों के विरुद्ध महर्षि ने समर की घोषणा कर दी। नोबल पुरस्कार विजेता रौम्या रोलां ने लिखा है कि महाभारत की भांति दयानन्द की धनुष की गूंज सारे भारत में सुनाई दी।

एक हजार सम्प्रदाय महर्षि के विरोधी हो गए और उन पर प्राण घातक हमले किए गए। सोलह बार विष दिया गया।

अब केवल वैदिक शिव का प्रचार ही उनका लक्ष्य नही रह गया परंतु देशभक्ति, समाज सुधार, अंधविश्वास, पाखंड एवं देश की स्वतंत्रता, न्याय प्रणाली, सुशासन, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, बाल विवाह का विरोध, अस्पृश्यता, जातिवाद का उन्मूलन, खाद्य अखाद्य और विदेश यात्रा आदि उनके आंदोलन के विषय हो गये।

महर्षि ने वेद का संदेश दिया 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम' महर्षि के संदेश का दावानल सारे संसार में फैलता हुआ दिखाई दिया। भारतवर्ष को वेदानुकूल बनाने में उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया परंतु भारतवर्ष बदला नहीं है। वही पौराणिकता की भयंकर आंधी चल रही है। मूर्ति पूजा का भी जोर पहले से बहुत अधिक हो गया है।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित वैदिक शिव की आराधना के स्थान पर वाममार्गी पौराणिक शिव का तांडव नृत्य

शिव की उपासना के स्थान पर शिवलिंग और शिवलिंग में बारह ज्योर्तिलिंग की बेशर्मी से उपासना हो रही है। द्रविड भाष्यकार मांसाहारी, व्याभिचारी और अधार्मिक व्यक्ति थे और इन्होंने वेदों में भी परिवर्तन करके वेदों में व्यभिचार, मद्य-मांसाहार की व्याख्या की। वेदों में कहीं भी लिंग पूजा का विधान नहीं है परंतु आस्था के नाम पर लाखों करोड़ों शिव भक्त लिंग पूजा कर रहे हैं। कहने को तो हिन्दू धर्म के सारे सम्प्रदाय वेदों को ईश्वरकृत मानते हैं परंतु आचरण पूर्णत: वेद विरुद्ध है। भारतवर्ष के समाचार पत्र इस वाममार्ग के प्रचार-प्रसार में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं और वेद प्रतिपादित शिव की उपासना को समाचार पत्रों में स्थान देने के लिए तैयार नहीं हैं। यह समाचार पत्र ही अज्ञान, अंधविश्वास, धर्म के नाम पर मद्य-मांस का प्रचार कर रहे हैं।

एक समाचार पत्र ने निम्नलिखित समाचार दिया-

शिवलिंग में 12 ज्योतिर्लिंग व दीवारों पर शिव के 1008 स्वरुप

दावा : राजस्थान के पाली में विश्वदीप ओम गुरुकुल में पहला ऐसा शिवालय, जहां शिव के सभी स्वरूप एक साथ

शिवरात्रि पर कीजिए ऐसे शिवालय के दर्शन, जहां एक ही शिवलिंग में 12 ज्योतिर्लिंग स्थापित किए गए हैं। यही नहीं, मंदिर में दीवारों पर सहस्त्रनाम शिव यानी शिव के 1008 नामों के अनुरूप आकृतियां भी उकेरी गई हैं। पाली के जाडन स्थित ओम आश्रम में बन रहे शिवालय में स्थापित शिवलिंग ओडिशा से बनवाकर मंगवाए गए हैं। साल 2009 से बन रहे इस मंदिर का उद्घाटन शीघ्र होगा। इसकी स्थापना महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वरानंद पुरी महाराज द्वारा की गई है। भगवान शिव के 12 स्वरूपों को एक ही शिवलिंग में स्वरूप देकर स्थापित किया गया है। इसके पीछे महामंडलेश्वर की मंशा यह थी कि 12 ज्योतिर्लिंग के दर्शन से व्यक्ति सात जन्मों के पापों से मुक्ति पा लेता है। लेकिन समय और धनकी कमी से अधिकांश लोग दर्शन नहीं कर पाते हैं। अब मात्र ओमकार मंदिर में आने से उसके सारे काम सफल हो जाएंगे।

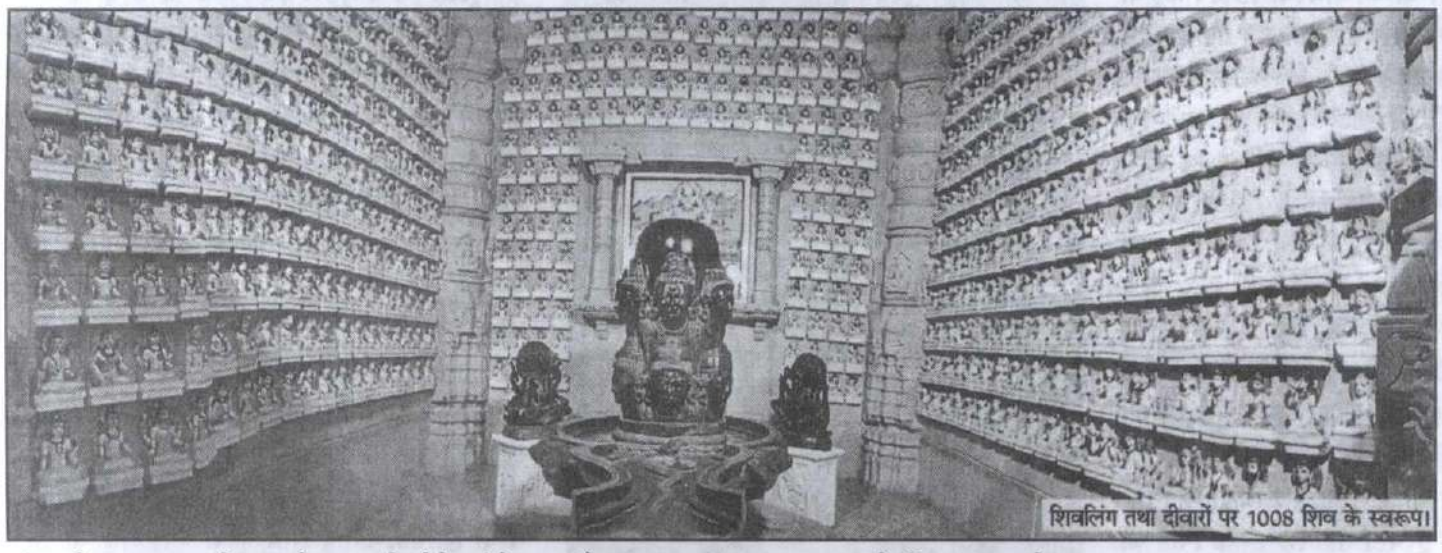
शिवलिंग तथा दीवारों पर 1008 शिव के स्वरूप।

12 ज्योतिर्लिंग से लाए जल से अभिषेक होगा

इस मंदिर का उद्घाटन 12 ज्योतिर्लिंग से लाए अभिषेक जल से ही किया जाएगा। ऐसा इसलिए किया जा रहा है, ताकि इसमें लगे 12 ज्योतिर्लिंग के स्वरूप जीवंत हो सकें। मंदिर को श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए खोला जाएगा।

ॐ आकृति की विश्व की यह पहली इमारत

जाडन में बना ॐ आकार का यह विश्व का पहला मंदिर है। इसकी स्थापना 1995 में हुई। मंदिर की तीसरी मंजिल पर स्फटिक का शिवलिंग है। मंदिर में 200 स्तम्भ है। सभी में अलग-अलग देवी देवताओं की मूर्तियां लगाई गई हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्र के चरित्र निर्माण पर जोर दिया था

उसकी उपेक्षा का परिणाम है आज सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को यह कहना पड़ा

देश में कानून नहीं बचा, पैसे के दम पर हमारे आदेश रोके जा रहे, कोर्ट को बंद कर दो, अब देश छोड़ना ही बेहतर-जस्टिस अरुण मिश्रा, सुप्रीम कोर्ट

स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष के पद से व्याख्यान देते हुए कहा था कि यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बन कर अपनी संतान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचार-ब्रह्मचारी हों, शिक्षक और कौमी ही शिक्षा पद्धति हो तब ही कौम की जरूरतों को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे, नहीं तो इसी तरह आपकी संतान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनी रहेगी।

स्वामी जी ने यह भी कहा था कि पहले देश का चरित्र निर्माण करो फिर आजादी के लिए संघर्ष करो। चरित्र निर्माण किये बिना आजादी मिल भी गई तो उसका क्या लाभ होगा। उन्होंने कहा कि आजादी के आंदोलन को अगले 50 वर्ष तक के लिए स्थगित कर दिया जाए और सारी शक्ति राष्ट्र के चरित्र निर्माण में लगाई जाए परंतु स्वामी श्रद्धानन्द की इस चेतावनी पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया इसीलिए आज देश की आजादी के 72 वर्ष बाद भी सर्वोच्च न्यायालय के जज को यह कहना पड़ा-

कंपनियों और दूरसंचार विभाग के डेस्क अफसर को अवमानना नोटिस

नई दिल्ली। दूरसंचार विभाग को 1.47 लाख करोड़ रु. चुकाने के फैसले पर अमल नहीं होने पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार और टेलीकॉम कंपनियों को कड़ी फटकार लगाई। कोर्ट का आदेश रोकने वाले दूरसंचार विभाग के डेस्ट अफसर के पत्र पर नाराज जस्टिस अरुण मिश्रा ने कहा- 'मैं बहुत हैरान और परेशान हूं। कोर्ट के आदेश के बावजूद एक भी पैसा नहीं दिया गया। इस देश में क्या हो रहा है? एक अफसर ने कोर्ट का आदेश रोकने का दुस्साहस कैसे किया? क्या कोर्ट के आदेश की कोई कीमत नहीं है? क्या देश में कोई कानून नहीं बचा है? मुझे अब इस देश में काम नहीं करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट को बंद कर देते हैं। देश छोड़ना ही बेहतर होगा। दौलत के दम पर वह कुछ भी कर सकते हैं। कोर्ट का आदेश भी रोक सकते हैं।'

डेस्ट ऑफिसर ने संवैधानिक अथॉरिटीज को लिखा था कि कंपनियों पर बकाया भुगतान का दबाव न बनाएं और न ही कार्रवाई करें। इससे सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल रुक गया था। सुप्रीम कोर्ट ने डेस्ट ऑफिसर और टेलीकॉम कंपनियों को अवमानना का नोटिस जारी किया है।

सभी टेलीकॉमप कंपनियों के एमडी 17 मार्च को तलब

सुप्रीम कोर्ट ने टेलीकॉम कंपनियों को 23 जनवरी तक एजीआर की पूरी रकम चुकाने के निर्देश दिए थे। कंपनियों ने उस आदेश में संशोधन की मांग की थी। जस्टिस अरुण मिश्रा, एस अब्दुल नजीर और एमआर शाह की बेंच ने इस पर सुनवाई की। पढ़िए कोर्ट की पूरी कार्यवाही...

कंपनियां: भुगतान के लिए अतिरिक्त समय दिया जाए। कोर्ट हमारे आवेदनों पर फैसला ले। इस बारे में दूरसंचार विभाग ने भी नोटिफिकेशन जारी किया है।

जस्टिस मिश्रा: ये आवेदन कौन दाखिल कर रहा है? दूरसंचार विभाग ने नोटिफिकेशन कैसे जारी कर दिया कि अभी भुगतान नहीं करने पर कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करेंगे? हैरानी है कि आदेश के बावजूद किसी कंपनी ने पैसा जमा नहीं करवाया। एक डेस्ट अफसर ने हमारा आदेश रोक रखा है।

तुषा मेहता (सॉलीसिटर जनरल): मैं इसके लिए माफी मांगता हूँ। डेस्ट अफसर ऐसा नहीं कर सकता।

जस्टिस मिश्रा: क्या आपने अफसर को यह आदेश वापस लेने के लिए कहा? यह सहन नहीं किया जा सकता। आपके अफसर का व्यवहार सही नहीं है। यह बड़ी कंपनियों को खुश करने के अलावा कुछ नहीं है। इसका प्रायोजक कौन है? दूरसंचार विभाग का सर्कूलर वापस लिया जाए। अधिकारी पर कार्रवाई करेंगे।

तुषार मेहता: आज कोई कार्रवाई न की जाए। हम स्पष्टीकरण देंगे।

जस्टिस मिश्रा: आप बचना चाहते हैं तो बता दें, हम सुनवाई से हट जाएंगे। 17 मार्च को सभी कंपनियों के एमडी पेश हों।

फटकार के बाद विभाग ने वह आदेश वापस लिया, जिसमें सख्ती नहीं करने की बात थी। छह घंटे बाद विभाग ने सभी कंपनियों को सारा बकाया चुकाने के निर्देश दिए हैं।

दूनाकार गांव का मामला

धर्म परिवर्तन सूचना से हड़कंप, चार हिरासत में

आबूरोड़ (पाली)। सदर थाना क्षेत्र के दूनाकारगांव में रविवार शाम एक समुदाय की ओर से आदिवासियों के धर्म परिवर्तन के प्रयास की सूचना पर पुलिस प्रशासन में हड़कम्प मच गया। समुदाय के 4 जनों को थाने लाने के प्रयास पर आसपास मौजूद आदिवासियों ने विरोध किया। अतिरिक्त जाप्ता मंगवाकर हिरासत में लिया गया।

जानकारी के अनुसार एक समुदाय के कुछ लोगों द्वारा आदिवासियों के साथ दूनाकाकर गांव में कुंड में महिलाओं को नहलाने का वीडियो वायरल होने पर हिन्दूवादी संगठनों ने पुलिस को अवगत करवाया। इस पर पुलिस मौके पर गई और परिवार से पूछताछ की।

आडम्बर की आड़ में धर्मांतरण की कोशिश करने की दी रिपोर्ट- इस मामले में बजरंग दल के तहसील अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह राठौड़ व देवराजसिंह राठौड़ ने रिपोर्ट देकर कुछ लोगों की ओर से आडम्बर की आड़ में आदिवासियों का धर्मांतरण करवाने की कोशिश करने का आरोपलगाया है। ग्रामीणों ने विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं को सूचना दी। उनके मार्फत मिली सूचना पर मौके पर पहुंचे तो देखा कि स्थानीय आदिवासी महिलाओं को पानी के कुंड में नहलाया जा रहा था व धर्म विशेष के नारे लग रहे थे। ग्रामीणों से पूछने पर बताया कि नारे लगाने से सारी बीमारी दूर हो जाती है। व्यक्ति लोगों को अपने धर्म की पुस्तकें बांट रहा था। पुलिस ने हिम्मतनगर निवासी दो महिलाओं समेत 4 जनों से पूछताछ कर रही है।

गरीब परिवारों की मदद को कोई नहीं आ रहा आगे

पाक में फिर हिन्दू लड़की का अपहरण, वीडियो वायरल

बाड़मेर। पाक में हिन्दू परिवारों की नाबालिग बच्चियों का अपहरण कर उनका धर्म परिवर्तन करवाने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

पाक के सिंध प्रांत के नवाबकोट के निकट एक 14 साल की हिन्दू लड़की का अपहरण हुआ है। उसे अपहर्ता बंदूक की नोक पर घर से उठा ले गए। गरीब परिवार सात दिन से रो-रोकर गुजारिश कर रहा है कि उनकी बेटी को वापस ला दो, लेकिन कहीं सुनवाई नहीं हो रहे है। इसका वीडयो वायरल हो रहा है।

पहले भी ऐसी वारदात

इसी तरह एक 16 साल की हिन्दू लड़की का जेकाकाबाद से अपहरण हुआ। मामला ज्यादा बढ़ा और हिन्दू संगठनों ने न्यायालय तक बात पहुंचाई तो इस लड़की को कम उम्र की बताकर सुधारगृह भेज दिया गया। लड़की का जबरन धर्म परिवर्तन की बात सामने आई।

परिवार के लोगों ने गुजारिश की कि उनकी बेटी के साथ ज्यादती हो चुकी है। अब उसको सुधारगृह भेजेंगे वहां कौनसी सुरक्षित रहेगी। बेटी हमें दे दी जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

सरकार मदद करे

सिंध और अन्य इलाकों में अत्याचार से हमारे परिवार चिंतित हैं। लोग भारत आना चाहते हैं, लेकिन आएं कैसे? हिन्दू परिवार की बेटियों के अपहरण की सूचना आती है, लेकिन हम भी यहां क्या कर सकते हैं। सरकार मदद करे।

-डॉ. बाबूदान चारण, अध्यक्ष, ढाटपारकर वेलफेयर सोसायटी

सिंध के लोग बुरे फंसे

सिंध में हालात खराब होने के बाद अब हिन्दू परिवारों के लिए यहां से निकलना भी मुनासिब नहीं है। थार एक्सप्रेस बंद हो चुकी है और अटारी के रास्ते आने की उनकी हैसियत नहीं है। भारत का आने का वीजा भी नहीं मिल रहा है। वीजा मांगते ही परिवारों के पीछे पाक की सुरक्षा एजेंसियां पड़ रही हैं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने आत्महत्या का विचार त्याग दिया

गुरु की तलाश में वन, पर्वत में 11 वर्ष तक भटकते रहे। वे घूमते-घूमते तुङ्गनाथ के शिखर पर जाकर पहुँचे। तुङ्गनाथ के मंदिर में बहुत-से पण्डों और बहुत-सी देवमूर्तियों को देखकर वे उसी दिन वहाँ से नीचे उतर आये। उतरते समय मार्ग भूल जाने के कारण वे बहुत ही विपन्न हो गये। हम यहाँ उन घटनाओं को लिखे बिना नही रह सकते जिनका वर्णन उन्होंने स्वयं किया है। इस वर्णन से दयानन्द के चरित्र में अकुतोभयता, असीम साहसिकता और अमोघ क्लेशसहिष्णुता का परिचय मिलता है। वे लिखते हैं– ''नीचे उतरते समय मैंने अपने सामने दो मार्ग देखे, एक मार्ग पश्चिम की ओर, दूसरा दक्षिण-पश्चिम की ओर जाता था। मैं यह स्थिर न कर सका कि उन मार्गों में से मुझे किस मार्ग से जाना चाहिए। अन्त में मैं उस मार्ग से चल दिया जो जङ्गल की ओर जाता था। कुछ दूर ही बढ़ता था कि मैं एक घने जङ्गल में घुस गया। जङ्गल में कहीं बड़े-बड़े ऊँचे-नीचे पाषाण-खण्डथे और कहीं जलहीन छोटी-छोटी नदियाँ थीं। थोड़ी दूर और आगे चलने पर मैंने देखा कि वह मार्ग रुका हुआ है। वहाँ किसी ओर भी कोई मार्ग न पाकर मैं सोचने लगा कि ऊँपर चढ़ूँ या नीचे उतरूँ। यदि ऊपर चढ़ता है तो अनेक विघ्न-बाधाओं का अतिक्रमण करना होगा और संभव है कि ऊपर चढ़ते-चढ़ते ही रात्रि हो जाए, अत: मैंने नीचे उतरना ही युक्तियुक्त समझा और कुछ घास के गुल्मों को दृढ़ पकड़कर मैं धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। थोड़ी देर पीछे मैं एक सूखी नदी के ऊँचे तट पर जा पहुँचा। उसके पीछे मैं एक ऊँची पत्थर की चट्टार पर खड़ा होकर चारों ओर देखने लगा। मैंने देखा कि चारों ही ओर ऊँची-ऊँची भूमि, छोटे-छोटे पर्वत और मनुष्य के लिए अगम्य और मार्गहीन वनस्थली थी। उस समय दिवाकार भी अस्ताचल की चोटी का अवलम्बन कर रहा था। उस समय यह विचार कर मेरा चित्त बहुत आंदोलित हो गया कि शीघ्र ही अंधकार फैल जाएगा, और उस अंधकार में मुझे इस भीषण वन में, जहाँ न मनुष्य है, न अग्नि जलाने का कोई उपाय है, अकेले रहना होगा। उस समय सिवाय उत्कट पुरुषार्थ का सहारा लेने के और कोई उपाय न था। यद्यपि उस दुर्गम वन के मार्ग में मेरे वस्त्रादि फट गये थे, शरीर क्षत-विक्षित हो गया था, पैर काँटों से छिद गये थे और इस कारण मैं लुञ्जों के समान चलता था तथा मैं केवल प्रबली पुरुषार्थ के प्रभाव से ही पार कर गया। अन्त में एक पर्वत के पादमूल में आकर मैंने एक मार्ग भी देखा। यद्यपि चारों ओर सब कुछ अंधकाराच्छन्न था तथापि मैंने विशेष सोच-विचार न करके वही मार्ग पकड़ लिया और किसी प्रकार भी उसे न छोड़कर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा, कुछ दूर आगे बढ़कर मैंने कुछ कुटियों की एक श्रेणी दिखी। कुटीवासियों से पूछने पर उन्होंने कहा कि वह मार्ग ओखीमठ की ओर गया है। मैं भी ओखीमठ की ओर चल दिया और थोड़ी देर पीछे ही वहाँ पहुँच गया।''

ओखीमठ में रात्रि बिताकर दयानन्द बहुत सवेरे उठे और शारीरिक क्लेश की कुछ भी परवा न करके पुनर्वार भ्रमण के लिए निकट खड़े हुए। जिस समय का यह वर्णन है उस समय दयानन्द की आयु प्राय: तीन वर्ष की थी। यौवन के पूर्ण विकास से उनकी शारीरिक शक्ति विकसित हो रही थी, परन्तु ऐसा होते हुए भी क्या कोई तीस वर्ष का युवक उल्लिखित प्रकार से क्लेश-यन्त्रणा सहन करके दूसरे दिन प्रात:काल ही पर्वत के मार्गों में भ्रमण करने के लिए दुबारा बाहर निकल सकता है? रात्रि में कुछ घण्टे विश्राम करके ही सम्पूर्ण रूप से सुस्थ और सबल होकर कौन काम करने के योग्य हो सकता है? क्या शारीरिक शक्ति की इस प्रकार की दुर्जेयता केवल खाने के पदार्थों पर ही निर्भर है? ओखी मठ से बाहर निकलकर वह कुछ दूर गये तो सही, परन्तु यह यात्रा उनके लिए प्रीतिदायक न हुई और इसलिए वे कुछ दिन बाद ही ओखी मठ लौट आये। इसके अतिरिक्त ओखी मठ के मठधारियों और मठवासियों की रीति-नीति और कार्य-कल्प का पर्यवेक्षण करना भी उनके वापस आने का एक कारण था। ओखी मठ एक विशिष्ठ मठ है साधुओं के अनेक आडम्बरों से परिपूर्ण हे। इस कारण उन्होंने कुछ दिन वहाँ अवस्थिति की। मठ के महन्त और वहाँ के साधु-संन्यासियों से विशेषरूप से परिचित होगये। वे यह देखने लगे कि मठ का कार्य किस प्रणाली के अनुसार होता है और मठवासी साधुता और वैराग्य के नाम पर कहाँ तक कृत्रिमता का अवलम्बन करते हैं।

वहाँ का महन्त उनसे इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उनसे शिष्य हो जाने का विशेषरूप से अनुरोध किया और यह प्रबल प्रलोभन भी उनके सामने उपस्थित किया कि उसके पीछे मठ के प्रचुर वित्तैश्वर्य्य के वही स्वामी हो जाएँगे, परन्तु महन्त क ऐसा प्रस्ताव करने पर दयानन्द बोल उठे कि– ''इस मठ की जितनी सम्पत्ति है उससे मेरे पिता की सम्पत्ति भी किसी अंश में कम न थी।'' एक शब्द में, मठाध्यक्ष के इस प्रलोभनात्मक प्रस्ताव को अग्राह्य करके वे ओखी मठ से चल दिये और जोशीमठ की ओर चले गये। जोशीमठ में कुछ दक्षिण शास्त्रियों और संन्यासियों के संसर्ग में कुछ दिन काटकर वहाँ के किसी-किसी योगी से योगविद्या के कुछ तत्त्वों की शिक्षा लेकर दयानन्द बदरीनारायण के मंदिर को चले गये। बदरीनारायण का प्रधान पण्डा रावलजी के नाम से प्रसिद्ध है। वेदादि शास्त्रों के सम्बन्ध में रावलजी के साथ दयानन्द की चर्चा हुई। वहाँ कुछ दिन रहकर अपनी सर्वोपरि कांक्षित वस्तु के विषय में उन्होंने रावलजी से सब बातें कह दीं और उनसे पूछा कि आस-पास कोई यथार्थ योगी वा सिद्धपुरुष रहते हैं कि नहीं? रावलजी ने उत्तर में कहा कि ''नहीं''। यह सुनकर स्वामीजी क्षुण्ण हो गये, परंतु जब रावलजी ने दुबारा कहा ''मैंने सुना है कि कभी-कभी वे मंदिर में दर्शन करने आ जाया करते हैं,'' तो दयानन्द कुछ आशान्वित हुए और उन्होंने आसपास के स्थानों में विशेषकर शैल-प्रदेशों में अनुसंधान करने की प्रतिज्ञा की। वहाँ से बाहर निकलते ही उन्हें जैसा विपन्न होना पड़ा, ऐसा इससे पहले अपने जीवन में कभी नहीं होना पड़ा था।

इस अप्रत्याशित विपत्-कहानी का वर्णन उन्हीं की भाषा में करते हैं– ''एक दिन सूर्य के निकलते ही मैं बदरीनाथ के मंदिर से बाहर निकला और पर्वत के नीचे-नीचे चलने लगा। अन्त में अलखनन्दा के तट पर जा पहुँचा। अलखनन्दा के उस पार बड़ा माना ग्राम दिखाई देने लगा, परन्तु उस पार जानेकी मेरी इच्छा न थी। मैंने पहाड़ के नीचे-नीचे जो मार्ग जाता था उसे पकड़ लिया और अलखनन्दा के साथ-साथ वन की ओर चलने लगा। पर्वत और पर्वत के नीचे का मार्ग सभी मोटे बर्फ से ढका हुआ था। इस कारण मैंने बहुत ही कष्ट से उस दुर्गम मार्ग का अतिक्रमण किया और जो स्थान अलखनन्दाहह का उत्पत्ति-स्थान प्रसिद्ध है, वहाँ पहुंच गया। वहाँ मैंने देखा कि मेरे चारों ओर गगनभेदी पर्वत-माला खड़ी है। एक ओर तो वह स्थान मेरे लिए सर्वथा अपरिचित था और दूसरी ओर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ था। अस्तु, किसी ओर भी मार्ग का कुछ पता न पाकर कुछ देर तक तो मैं इतस्तत: घूमता रहा और फिर कुछ आगे बढ़कर मैंने देखा कि मार्ग तो क्या मार्ग का चिह्न तक भी न था। इस हेतु से मैं थोड़ी देर तक तो किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा रहा, पीछे नदी के दूसरे तट पर जाकर मार्ग का अनुसंधान करना ही कर्त्तव्य स्थिर तकया।

उस समय मैं साधारण और पतला कपड़ा पहने हुए था और वहाँ का शीत बहुत ही अधिक और असह्य था। इस पर भूख और प्यास से शरीर क्लान्त हो रहा था। भूख मिटाने के लिए मैंने एक बर्फ का टुकड़ा गले से नीचे उतारा, परन्तु उससे कुछ भी न हुआ। इसके कुछ क्षण पश्चात ही अलखनन्दा को पार करने के लिए मैं जल में उतरा। उसका जल किसी स्थान में बहुत ही गहरा था और कहीं बहुत थोड़ा था, परन्तु जहाँ थोड़ा भी था वह भी एक हाथ से कम न था। अलखनन्दा का पाट आठ-दस हाथ होगा। उसकी तली छोटे-छोटे बर्फ के टुकड़ों से भरी हुई थी। उन तीक्ष्ण धारवाले बर्फ के टुकड़ों के संघर्षण से मेरे नंगे तलवे क्षत-विक्षत हो गये थे। क्षत-विक्षत स्थानों से लोहू चूना आरंभ हो गया था। इधर मैं उस लोहू के बहने से कातर हो रहा था, उधर निदारुण शीत से ह्रत-चेतन हो रहा था। मैरे पैर डगमगाने लगे। कई बार उस बर्फ-माला के ऊपर जा पड़ने का उपक्रम हुआ। उस समय मेरे मन में यह विचार उठने लगा कि सम्भवत: अलखनन्दा के इस असहनीय शीतल गर्भ में गिरकर बर्फ में जमकर मेरा जीवन जाएगा। वास्तव में मेरा शरीर इतना अवसन्न और शक्तिहीन हो गया था कि यदि मैं अलखनन्दा की उस सुदूर विस्तृत बर्फ-माला के ऊपर एक बार भी गिर जाता तो मुझे उस पर से शरीर को उठाना अत्यन्त कठिन हो जाता। अस्तु, अतीव कष्ट और उत्कृष्ट परिश्रम से मैं नदी के दूसरी पार पहुँचा। उस समय की मेरी अवस्था मृतवत् थी। मैंने जल्दी-जल्दी अपने शरीर पर से कपड़े उतारे और उनकी पट्टी बनाकर तलवों से लेकर घुटनों तक बाँधी।

उस समय मैं बहुत ही थका हुआ था और भूख से विह्वल था तथा मुझमें चलने की शक्ति न थी। दूसरे की सहायता करेगा और सहायता कहाँ से आएगी, इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता था। जब मैंने अंतिम बार देखा तो कुछ दूर पर मुझे दो मनुष्य आते हुए दिखाई दिये। थोड़ी देर पीछे ही उन दोनों पहाड़ी मनुष्यों ने मेरे पास आकर नमस्कार किया। उन्होंने कहा कि हमारे घर चलने से भोजन-सामग्री मिल सकेगी और यह कहकर उन्होंने मुझसे अपने साथ उनके घर चलने को कहा। उन्होंने मेरे क्लेश और विपत्ति की कहानी सुनकर मुझे सद्-पत नामक स्थान तक पहुँचा देने का वचन दिया, परंतु मुझमें चलने का सामर्थ्य न था, इसलिए मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार नही किया। उनके बारम्बार अनुरोधकरने पर भी मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। उनके अधिक आग्रह करने पर मैंने कहा कि मैं यहाँ चाहे मर भले ही जाऊँ, परंतु मैं उनके अनुरोध को स्वीकार नहीं कर सकता। मरने की बात सोचकर मैं मन में कुछ घबराया, परंतु फिर तुरंत ही सोचा कि यह क्या है? मैं मरने की इच्छा क्यों करता हूँ? क्या ज्ञानानुशीलन में रत रहकर ही जीवन का अन्त करना मेरे लिए श्रेष्ठ कर्त्तव्य नहीं है? देखते-देखते ही वे दोनों पहाड़ी मनुष्य पर्वतमाला में कहीं अदृश्य हो गये। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् मैंने वापस जाने का उद्योग

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महर्षि दयानन्द द्वारा शैव मत की समीक्षा

शिव पुराण में शिव ने इच्छा की कि मैं सृष्टि करूँ। तो एक जलाशय में नारायण को उत्पन्न कर उसकी नाभि से कमल, कमल में से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। उसने देखा कि जब जलमय है। जल की अञ्जलि उठा, देख, जल में पटक दी, उससे एक बुदबुदा उठा और बुदबुदे में से एक पुरुष उत्पन्न हुआ, उसने ब्रह्मा से कहा कि हे पुत्र! सृष्टि उत्पन्न कर। ब्रह्मा ने उससे कहा कि मैं तेरा पुत्र नहीं, किन्तु तू मेरा पुत्र है। उनमें विवाद हुआ और दिव्य सहस्र वर्ष पर्य्यन्त दोनों जल पर लड़ते रहे। तब महादेव ने विचार किया कि जिनको मैंने सृष्टि करने के लिये भेजा था, वे दोनों आपस में लड़-झगड़ रहे हैं। तब उन दोनों के बीच में से एक तेजोमय लिङ्ग उत्पन्न हुआ और वह शीघ्र आकाश में चला गया उसको देखके दोनों साश्चर्य्य हो गये, विचारा कि इसका आदि-अन्त लेना चाहिये। जो आदि-अन्त लेके शीघ्र आवे, वह पिता और जो पीछे, वा, थाह लेके न आवे वह पुत्र कहावे। विष्णु कूर्म का स्वरूप धरके नीचे को चला, और ब्रह्मा हंस का शरीर धारण करके ऊपर को उड़ा। दोनों मनोवेग से चले। दिव्यसहस्र वर्ष पर्य्यन्त दोनों चलते रहे, तो भी उसका अन्त न पाया। तब नीचे से ऊपर विष्णु और ऊपर से नीचे ब्रह्मा चला। ब्रह्मा ने विचारा कि जो वह छेड़ा ले आया होगा तो मुझको पुत्र बनना पड़ेगा। ऐसा सोच रहा था कि उसी समय एक गाय और एक केतकी का वृक्ष ऊपर से उतर आया। उनसे ब्रह्मा ने पूछा कि तुम कहाँ से आए। उन्होंने कहा हम सहस्र वर्षों से इस लिङ्ग के आधार से चले आते हैं। ब्रह्मा ने पूछा इस लिङ्ग का थाह है वा नहीं? उन्होंने कहा कि नहीं। ब्रह्मा ने उनसे कहा कि तुम हमारे साथ चलो और ऐसी साक्षी देओ कि मैं इस लिङ्ग के शिर पर दूध की धारा वर्षाती थी और वृक्ष कहे कि मैं फूल वर्षाता था, ऐसी साक्षी देओ तो मैं तुम को ठिकाने पर ले चलूँ। उन्होंने कहा कि हम झूठी साक्षी नहीं देंगे। तब ब्रह्मा कुपित होकर बोला जो साक्षी नहीं देओगे तो मैं तुम को अभी भस्म कर देता हूँ। तब दोनों ने डर के कहा कि हम, जैसी तुम कहते हो, वैसी साक्षी देवेंगे। तब तीनों नीचे की ओर चले। विष्णु प्रथम ही आ गये थे, ब्रह्मा भी पहुँचा, विष्णु से पूछा कि तू थाह ले आया वा नहीं? तब विष्णु बोला मुझको इसका थाह नहीं मिला। ब्रह्मा ने कहा, मैं ले आया। विष्णु ने कहा, कोई साक्षी देओ। तब गाय और वृक्ष ने साक्षी दी, हम दोनों लिङ्ग के शिर पर थे। तब लिङ्ग में से शब्द निकला और शाप दिया कि जिससे तू झूँठ बोला, इसलिए तेरा फूल मुझ वा अन्य देवता पर जगत् में कहीं नहीं चढ़ेगा। और जो कोई चढ़ावेगा, उसका सत्यानाश होगा। गाय को शाप दिया कि जिस मुख से तू झूठ बोली, उसी से विष्ठा खाया करेगी, तेरे मुख की पूजा कोई नहीं करेगा, किन्तु पूँछ की करेंगे। और ब्रह्मा को शाप दिया कि तू मिथ्या बोला इसलिए तेरी पूजा संसार में कहीं न होगी। और विष्णु को वर दिया कि तू सत्य बोला इससे तेरी पूजा सर्वत्र होगी। पुनः दोनों ने लिङ्ग की स्तुति की। उस से प्रसन्न होकर, उस लिङ्ग में से एक जटाजूट मूर्ति निकल आई और कहा कि तुमको मैंने सृष्टि करने के लिए भेजा था। झगड़े में क्यों लगे रहे? ब्रह्मा और विष्णु ने कहा कि

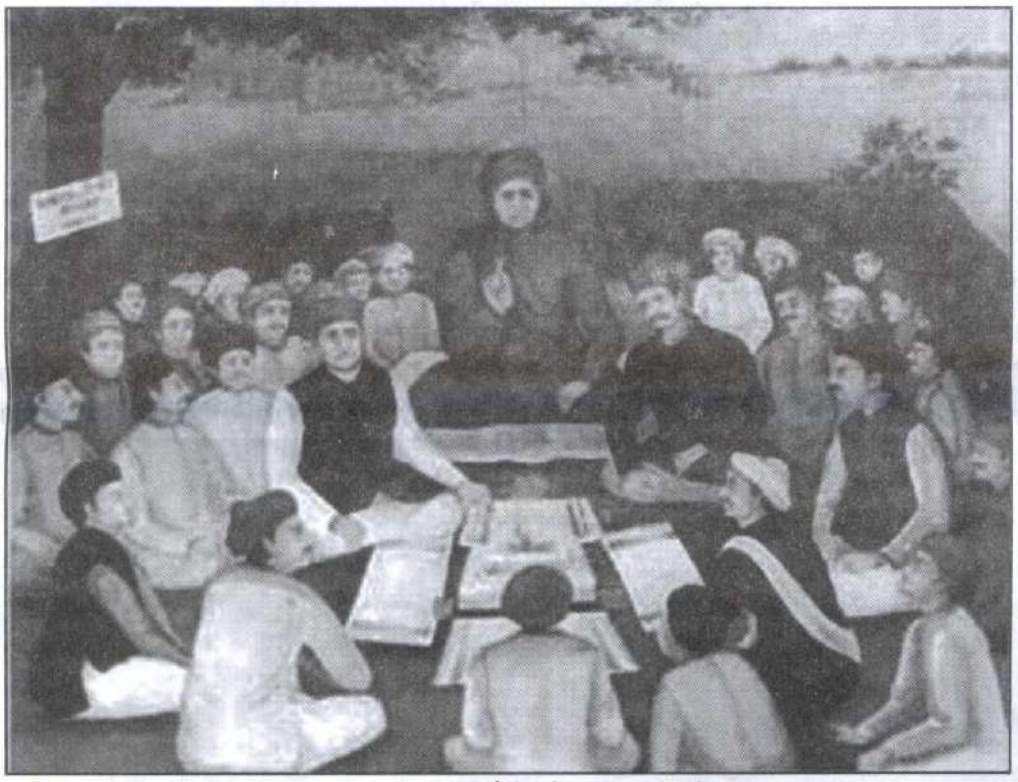

हम बिना सामग्री सृष्टि कहाँ से करें? तब महादेव ने अपनी जटा में से एक भस्म का गोला निकालकर दिया कि जाओ इसमें से सब सृष्टि बनाओ इत्यादि। भला कोई इन पुराणों के बनाने वालों से पूछे कि जब सृष्टि तत्व और पञ्च महाभूत भी नहीं थे तो ब्रह्मा, विष्णु, महादेव के शरीर, जल, कमल, लिङ्ग, गाय और केतकी का वृक्ष और भस्म का गोला क्या तुम्हारे बाबा के घर में से आ गिरे?

प्रश्न. शैव मतवाले तो अच्छे होते हैं? उत्तर. अच्छे कहाँ से होते हैं! जैसा प्रेतनाथ वैसा भूतनाथ जैसे वाममार्गी मंत्रोपदेशादि से उनका धन हरते हैं, वैसे शैव भी ''ओं नमः शिवाय'' इत्यादि पञ्चाक्षरादि मंत्रों का उपदेश करते, रुद्राक्ष भस्म धारण करते, मट्टी के और पाषाणादि के लिङ्ग बना कर पूजते हैं और हर-हर बं बं बकरे के शब्द के समान बड़, बड़ मुख से शब्द करते हैं उसका कारण यह कहते हैं कि ताली बजाने और बं बं शब्द बोलने से पार्वती प्रसन्न और महादेव अप्रसन्न होता है, क्योंकि जब भस्मासुर के आगे से महादेव भागे थे, तब बं बं और ठट्ठे की तालियां बजी थीं और गाल बजाने से पार्वती अप्रसन्न और महादेव प्रसन्न होते हैं, क्योंकि पार्वती के पिता दक्षप्रजापति का शिर काट आगी में डाल उसके धड़ पर बकरे का शिर लगा दिया था, उसी की नकल बकरे के शब्द के तुल्य गाल बजाना मानते हैं। शिवरात्रि प्रदेश का व्रत करते हैं, इत्यादि से मुक्ति मानते हैं। इसलिये जैसे वाममार्गी भ्रान्त हैं, वैसे शैव भी। इनमें विशेष कर कनफटे, नाथ, गिरी, पुरी, बन, आरण्य, पर्वत और सागर तथा गृहसी भी शैव होते हैं। कोई-कोई ''दोनों घ्होड़ों पर चढ़ते हैं'' अर्थात् वाम और शैव दोनों मतों को मानते हैं और कितने ही वैष्णव भी रहते हैं उनका-

अन्तःशाक्ता बहिश्शैवा सभामव्ये च वैष्णवाः।
नानारूपधराः कौला विचरन्तीह महीतले॥

भीतर शाक्त अर्थात् वाममार्गी, बाहर शैव अर्थात् रुद्राक्ष भस्मधारण करते है और सभा में वैष्णव कहाते हैं कि हम विष्णु के उपासक हैं। ऐसे नाना प्रकार के रूपधारण करके वाममार्गी लोग पृथिवी में विचरते हैं।

बेटियों की सुरक्षा में कोताही के प्रति हो जीरो टॉलरेंस

कभी पाकिस्तान की संसद में जाने का मौका मिले तो महिला सांसदों की संख्या (कुल 20 प्रतिशत महिला आरक्षण है) देख लगेगा कि दुनिया में सबसे ज्यादा महिला हित की चेतना इसी देश में है। लेकिन, इसी देश की लाखों लड़कियां सबसे बड़ी जरूरत शिक्षा और स्वास्थ्य से महरूम हैं, क्योंकि आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान-ए-पाकिस्तान का 'फाटा' क्षेत्र में फरमान है कि लड़कियां केवल घर में पढ़ेंगी और पुरुष डॉक्टर लड़कियों के शरीर को स्पर्श नहीं करेंगे। लिहाजा यहां नारी स्वतंत्रता केवल अभिजात्य वर्ग तक सीमित है। कमजोर वर्ग की पाकिस्तानी महिलाएं जानवरों से भी बदतर जीवन जीती हैं। दूसरी तरफ भारत में मंचों से, विधायिकाओं में और आलेखों के जरिये हम सभी 'नारी मुक्ति' की बात तो करते हैं, लेकिन राजनीतिक वर्ग के लिए देश की यह आधी आबादी अब भी 'वोटिंग ब्लॉक' नहीं है, लिहाजा वैसी गंभीरता नहीं दिखाई देती, जिसकी जरूरत है। निर्भया कांड हो, हैदराबाद का दिशा दुष्कर्म कांड या महिलाओं के प्रति अन्य अपराध, सभी में सरकारी तंत्र की असंवेदनशीलता की कहीं न कहीं गुनाहगार रही है। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में पिछले साल अगस्त में एक 15 वर्षीय छात्रा से स्कूल से लौटते वक्त गांव के ही संपन्न युवक ने बलात्कार किया, लेकिन पुलिस ने कोई केस दर्ज नहीं किया। तीन दिन बाद बमुश्किल जब केस दर्ज हुआ तो अभियुक्त फरार हो गया। पिछले सप्ताह उसने लड़की और उसके पिता को कुछ गुर्गों के साथ रात में घर आकर धमकी दी। इस पर लड़की का पिता थाने गया तो पुलिस ने डांटकर भगा दिया। दो दिन पहले उस दुष्कर्मी ने लड़की के पिता की हत्या कर दी और अब वह लड़की अनाथ है। सवाल यह है कि क्या वह सालों तक चलने वाले मुकदमे में इस हत्यारे व दुष्कर्मी को सजा दिलवाने की हिम्मत कर पाएगी? क्या किसी सभ्य समाज में लड़कियों की ऐसी स्थिति के बाद भी मेरा भारत महान कहा जा सकता है? अगर सरकारी तंत्र ऐसी लापरवाही और आपराधिक मिलीभगत करेगा तो फिर नारी मुक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के नारे बेकार हैं। लड़कियों की शिक्षा की योजनाएं सफल हों, इसके लिए जरूरी है कि उनकी सुरक्षा में कोताही के खिलाफ जीरो टोलरेंस हो।

ज्ञान प्राप्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने आत्महत्या का विचार त्याग दिया

गुरु की तलाश में वन, पर्वत में 11 वर्ष तक भटकते रहे। वे घूमते-घूमते तुङ्गनाथ के शिखर पर जाकर पहुँचे। तुङ्गनाथ के मंदिर में बहुत-से पण्डों और बहुत-सी देवमूर्तियों को देखकर वे उसी दिन वहाँ से नीचे उतर आये। उतरते समय मार्ग भूल जाने के कारण वे बहुत ही विपन्न हो गये। हम यहाँ उन घटनाओं को लिखे बिना नही रह सकते जिनका वर्णन उन्होंने स्वयं किया है। इस वर्णन से दयानन्द के चरित्र में अकुतोभयता, असीम साहसिकता और अमोघ क्लेशसहिष्णुता का परिचय मिलता है। वे लिखते हैं– ''नीचे उतरते समय मैंने अपने सामने दो मार्ग देखे, एक मार्ग पश्चिम की ओर, दूसरा दक्षिण-पश्चिम की ओर जाता था। मैं यह स्थिर न कर सका कि उन मार्गों में से मुझे किस मार्ग से जाना चाहिए। अन्त में मैं उस मार्ग से चल दिया जो जङ्गल की ओर जाता था। कुछ दूर ही बढ़ता था कि मैं एक घने जङ्गल में घुस गया। जङ्गल में कहीं बड़े-बड़े ऊँचे-नीचे पाषाण-खण्डथे और कहीं जलहीन छोटी-छोटी नदियाँ थीं। थोड़ी दूर और आगे चलने पर मैंने देखा कि वह मार्ग रुका हुआ है। वहाँ किसी ओर भी कोई मार्ग न पाकर मैं सोचने लगा कि ऊँपर चढ़ूँ या नीचे उतरूँ। यदि ऊपर चढ़ता है तो अनेक विघ्न-बाधाओं का अतिक्रमण करना होगा और संभव है कि ऊपर चढ़ते-चढ़ते ही रात्रि हो जाए, अत: मैंने नीचे उतरना ही युक्तियुक्त समझा और कुछ घास के गुल्मों को दृढ़ पकड़कर मैं धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। थोड़ी देर पीछे मैं एक सूखी नदी के ऊँचे तट पर जा पहुँचा। उसके पीछे मैं एक ऊँची पत्थर की चट्टार पर खड़ा होकर चारों ओर देखने लगा। मैंने देखा कि चारों ही ओर ऊँची-ऊँची भूमि, छोटे-छोटे पर्वत और मनुष्य के लिए अगम्य और मार्गहीन वनस्थली थी। उस समय दिवाकार भी अस्ताचल की चोटी का अवलम्बन कर रहा था। उस समय यह विचार कर मेरा चित्त बहुत आंदोलित हो गया कि शीघ्र ही अंधकार फैल जाएगा, और उस अंधकार में मुझे इस भीषण वन में, जहाँ न मनुष्य है, न अग्नि जलाने का कोई उपाय है, अकेले रहना होगा। उस समय सिवाय उत्कट पुरुषार्थ का सहारा लेने के और कोई उपाय न था। यद्यपि उस दुर्गम वन के मार्ग में मेरे वस्त्रादि फट गये थे, शरीर क्षत-विक्षित हो गया था, पैर काँटों से छिद गये थे और इस कारण मैं लुञ्जों के समान चलता था तथा मैं केवल प्रबली पुरुषार्थ के प्रभाव से ही पार कर गया। अन्त में एक पर्वत के पादमूल में आकर मैंने एक मार्ग भी देखा। यद्यपि चारों ओर सब कुछ अंधकाराच्छन्न था तथापि मैंने विशेष सोच-विचार न करके वही मार्ग पकड़ लिया और किसी प्रकार भी उसे न छोड़कर मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा, कुछ दूर आगे बढ़कर मैंने कुछ कुटियों की एक श्रेणी दिखी। कुटीवासियों से पूछने पर उन्होंने कहा कि वह मार्ग ओखीमठ की ओर गया है। मैं भी ओखीमठ की ओर चल दिया और थोड़ी देर पीछे ही वहाँ पहुँच गया।''

ओखीमठ में रात्रि बिताकर दयानन्द बहुत सवेरे उठे और शारीरिक क्लेश की कुछ भी परवा न करके पुनर्वार भ्रमण के लिए निकट खड़े हुए। जिस समय का यह वर्णन है उस समय दयानन्द की आयु प्राय: तीन वर्ष की थी। यौवन के पूर्ण विकास से उनकी शारीरिक शक्ति विकसित हो रही थी, परन्तु ऐसा होते हुए भी क्या कोई तीस वर्ष का युवक उल्लिखित प्रकार से क्लेश-यन्त्रणा सहन करके दूसरे दिन प्रात:काल ही पर्वत के मार्गों में भ्रमण करने के लिए दुबारा बाहर निकल सकता है? रात्रि में कुछ घण्टे विश्राम करके ही सम्पूर्ण रूप से सुस्थ और सबल होकर कौन काम करने के योग्य हो सकता है? क्या शारीरिक शक्ति की इस प्रकार की दुर्जेयता केवल खाने के पदार्थों पर ही निर्भर है? ओखी मठ से बाहर निकलकर वह कुछ दूर गये तो सही, परन्तु यह यात्रा उनके लिए प्रीतिदायक न हुई और इसलिए वे कुछ दिन बाद ही ओखी मठ लौट आये। इसके अतिरिक्त ओखी मठ के मठधारियों और मठवासियों की रीति-नीति और कार्य-कल्प का पर्यवेक्षण करना भी उनके वापस आने का एक कारण था। ओखी मठ एक विशिष्ठ मठ है साधुओं के अनेक आडम्बरों से परिपूर्ण हे। इस कारण उन्होंने कुछ दिन वहाँ अवस्थिति की। मठ के महन्त और वहाँ के साधु-संन्यासियों से विशेषरूप से परिचित होगये। वे यह देखने लगे कि मठ का कार्य किस प्रणाली के अनुसार होता है और मठवासी साधुता और वैराग्य के नाम पर कहाँ तक कृत्रिमता का अवलम्बन करते हैं।

वहाँ का महन्त उनसे इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उनसे शिष्य हो जाने का विशेषरूप से अनुरोध किया और यह प्रबल प्रलोभन भी उनके सामने उपस्थित किया कि उसके पीछे मठ के प्रचुर वित्तैश्वर्य्य के वही स्वामी हो जाएँगे, परन्तु महन्त क ऐसा प्रस्ताव करने पर दयानन्द बोल उठे कि– ''इस मठ की जितनी सम्पत्ति है उससे मेरे पिता की सम्पत्ति भी किसी अंश में कम न थी।'' एक शब्द में, मठाध्यक्ष के इस प्रलोभनात्मक प्रस्ताव को अग्राह्य करके वे ओखी मठ से चल दिये और जोशीमठ की ओर चले गये। जोशीमठ में कुछ दक्षिण शास्त्रियों और संन्यासियों के संसर्ग में कुछ दिन काटकर वहाँ के किसी-किसी योगी से योगविद्या के कुछ तत्त्वों की शिक्षा लेकर दयानन्द बदरीनारायण के मंदिर को चले गये। बदरीनारायण का प्रधान पण्डा रावलजी के नाम से प्रसिद्ध है। वेदादि शास्त्रों के सम्बन्ध में रावलजी के साथ दयानन्द की चर्चा हुई। वहाँ कुछ दिन रहकर अपनी सर्वोपरि कांक्षित वस्तु के विषय में उन्होंने रावलजी से सब बातें कह दीं और उनसे पूछा कि आस-पास कोई यथार्थ योगी वा सिद्धपुरुष रहते हैं कि नहीं? रावलजी ने उत्तर में कहा कि ''नहीं''। यह सुनकर स्वामीजी क्षुण्ण हो गये, परंतु जब रावलजी ने दुबारा कहा ''मैंने सुना है कि कभी-कभी वे मंदिर में दर्शन करने आ जाया करते हैं,'' तो दयानन्द कुछ आशान्वित हुए और उन्होंने आसपास के स्थानों में विशेषकर शैल-प्रदेशों में अनुसंधान करने की प्रतिज्ञा की। वहाँ से बाहर निकलते ही उन्हें जैसा विपन्न होना पड़ा, ऐसा इससे पहले अपने जीवन में कभी नहीं होना पड़ा था।

इस अप्रत्याशित विपत्-कहानी का वर्णन उन्हीं की भाषा में करते हैं– ''एक दिन सूर्य के निकलते ही मैं बदरीनाथ के मंदिर से बाहर निकला और पर्वत के नीचे-नीचे चलने लगा। अन्त में अलखनन्दा के तट पर जा पहुँचा। अलखनन्दा के उस पार बड़ा माना ग्राम दिखाई देने लगा, परन्तु उस पार जानेकी मेरी इच्छा न थी। मैंने पहाड़ के नीचे-नीचे जो मार्ग जाता था उसे पकड़ लिया और अलखनन्दा के साथ-साथ वन की ओर चलने लगा। पर्वत और पर्वत के नीचे का मार्ग सभी मोटे बर्फ से ढका हुआ था। इस कारण मैंने बहुत ही कष्ट से उस दुर्गम मार्ग का अतिक्रमण किया और जो स्थान अलखनन्दाहह का उत्पत्ति-स्थान प्रसिद्ध है, वहाँ पहुंच गया। वहाँ मैंने देखा कि मेरे चारों ओर गगनभेदी पर्वत-माला खड़ी है। एक ओर तो वह स्थान मेरे लिए सर्वथा अपरिचित था और दूसरी ओर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ था। अस्तु, किसी ओर भी मार्ग का कुछ पता न पाकर कुछ देर तक तो मैं इतस्तत: घूमता रहा और फिर कुछ आगे बढ़कर मैंने देखा कि मार्ग तो क्या मार्ग का चिह्न तक भी न था। इस हेतु से मैं थोड़ी देर तक तो किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा रहा, पीछे नदी के दूसरे तट पर जाकर मार्ग का अनुसंधान करना ही कर्त्तव्य स्थिर तकया।

उस समय मैं साधारण और पतला कपड़ा पहने हुए था और वहाँ का शीत बहुत ही अधिक और असह्य था। इस पर भूख और प्यास से शरीर क्लान्त हो रहा था। भूख मिटाने के लिए मैंने एक बर्फ का टुकड़ा गले से नीचे उतारा, परन्तु उससे कुछ भी न हुआ। इसके कुछ क्षण पश्चात ही अलखनन्दा को पार करने के लिए मैं जल में उतरा। उसका जल किसी स्थान में बहुत ही गहरा था और कहीं बहुत थोड़ा था, परन्तु जहाँ थोड़ा भी था वह भी एक हाथ से कम न था। अलखनन्दा का पाट आठ-दस हाथ होगा। उसकी तली छोटे-छोटे बर्फ के टुकड़ों से भरी हुई थी। उन तीक्ष्ण धारवाले बर्फ के टुकड़ों के संघर्षण से मेरे नंगे तलवे क्षत-विक्षत हो गये थे। क्षत-विक्षत स्थानों से लोहू चूना आरंभ हो गया था। इधर मैं उस लोहू के बहने से कातर हो रहा था, उधर निदारुण शीत से ह्रत-चेतन हो रहा था। मैरे पैर डगमगाने लगे। कई बार उस बर्फ-माला के ऊपर जा पड़ने का उपक्रम हुआ। उस समय मेरे मन में यह विचार उठने लगा कि सम्भवत: अलखनन्दा के इस असहनीय शीतल गर्भ में गिरकर बर्फ में जमकर मेरा जीवन जाएगा। वास्तव में मेरा शरीर इतना अवसन्न और शक्तिहीन हो गया था कि यदि मैं अलखनन्दा की उस सुदूर विस्तृत बर्फ-माला के ऊपर एक बार भी गिर जाता तो मुझे उस पर से शरीर को उठाना अत्यन्त कठिन हो जाता। अस्तु, अतीव कष्ट और उत्कृष्ट परिश्रम से मैं नदी के दूसरी पार पहुँचा। उस समय की मेरी अवस्था मृतवत् थी। मैंने जल्दी-जल्दी अपने शरीर पर से कपड़े उतारे और उनकी पट्टी बनाकर तलवों से लेकर घुटनों तक बाँधी।

उस समय मैं बहुत ही थका हुआ था और भूख से विह्वल था तथा मुझमें चलने की शक्ति न थी। दूसरे की सहायता करेगा और सहायता कहाँ से आएगी, इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता था। जब मैंने अंतिम बार देखा तो कुछ दूर पर मुझे दो मनुष्य आते हुए दिखाई दिये। थोड़ी देर पीछे ही उन दोनों पहाड़ी मनुष्यों ने मेरे पास आकर नमस्कार किया। उन्होंने कहा कि हमारे घर चलने से भोजन-सामग्री मिल सकेगी और यह कहकर उन्होंने मुझसे अपने साथ उनके घर चलने को कहा। उन्होंने मेरे क्लेश और विपत्ति की कहानी सुनकर मुझे सद्-पत नामक स्थान तक पहुँचा देने का वचन दिया, परंतु मुझमें चलने का सामर्थ्य न था, इसलिए मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार नही किया। उनके बारम्बार अनुरोधकरने पर भी मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। उनके अधिक आग्रह करने पर मैंने कहा कि मैं यहाँ चाहे मर भले ही जाऊँ, परंतु मैं उनके अनुरोध को स्वीकार नहीं कर सकता। मरने की बात सोचकर मैं मन में कुछ घबराया, परंतु फिर तुरंत ही सोचा कि यह क्या है? मैं मरने की इच्छा क्यों करता हूँ? क्या ज्ञानानुशीलन में रत रहकर ही जीवन का अन्त करना मेरे लिए श्रेष्ठ कर्त्तव्य नहीं है? देखते-देखते ही वे दोनों पहाड़ी मनुष्य पर्वतमाला में कहीं अदृश्य हो गये। कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् मैंने वापस जाने का उद्योग

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महर्षि ने संस्कार विधि पुस्तक लिखी

अब भारतवर्ष वेदों में प्रतिपादित संस्कारों के महत्व को समझने लगा

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में गर्भाधान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादकद्रव्य; मद्य, दुर्गन्ध, रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शांति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें, वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजस्, वीर्य्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तमगुणयुक्त हों। जैसा ऋतुगमन का विधि अर्थात् रजोदर्शन के पाँचवें दिवस से लेके सोलहवें दिवस तक ऋतुदान देने का समय है। उन दिनों में से प्रथम के चार दिन त्याज्य हैं। रहे 12 दिन; उनमें एकादशी और त्रयोदशी को छोड़ के बाकी 10 रात्रियों में गर्भाधान करना उत्तम है। और रजोदर्शन के दिन से लेके 16वीं रात्रि के पश्चात् न समागम करना।

पुन: जब तक ऋतुदान का समय पूर्वोक्त न आवे तब तक और गर्भस्थिति के पश्चात् एक वर्ष तक संयुक्त न हों। जब दोनों के शरीर में आरोग्य, परस्पर प्रसन्नता, किसी प्रकार का शोक न हो; जैसा चरक और सुश्रुत में भोजन छादन का विधान और मनुस्मृति में स्त्री पुरुष की प्रसन्नता की रीति लिखी है, उसी प्रकार करें और वर्त्तें। गर्भाधान के पश्चात् स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन-छादन करना चाहिये। पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त स्त्री पुरुष का संग न करे। बुद्धि, बल, रूप, आरोग्य, पराक्रम, शांति आदि गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहे कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।

गर्भ संस्कार : डिप्लोमा कोर्स शुरू करने की तैयारी

लखनऊ विवि पढ़ाएगा गर्भावस्था में क्या पहनें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश का लखनऊ विश्वविद्यालय नए शैक्षणिक सत्र से 'गर्भ संस्कार' पर डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू करेगा। ऐसा करने वाला वह देश का पहला विश्वविद्यालय है। कोर्स के तहत गर्भवती स्त्री से जुड़ी बातें सिखाई जाएंगी।

बताया जाएगा कि गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को क्या पहनना चाहिए, उन्हें क्या खाना चाहिए, उन्हें कैसा बर्ताव करना चाहिए, किस तरह का संगीत उनके लिए अच्छा होगा और कैसे वह खुद को फिट रख सकती हैं।

यूनिवर्सिटी का दावा है कि यह कोर्स रोजगार पैदा करने की दिशा में भी कारगर साबित होगा। लड़के भी इस कोर्स में दाखिला ले सकते हैं। पिछले साल विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के दौरान आनंदीबेन पटेल ने महाभारत के योद्धा अभिमन्यु का उदाहरण देते हुए कहा था कि उन्होंने (अभिमन्यु) अपनी माँ के गर्भ में रह कर ही युद्ध कला सीख ली थी। उन्होंने यह भी दावा किया था कि जर्मनी में एक संस्थान इस तरह का कोर्स करवाती है।

राज्यपाल का प्रस्ताव— विश्वविद्यालय के प्रवक्ता दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि यूपी की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के प्रस्ताव के बाद यह फैसला लिया गया है। राज्यपाल प्रदेश के विश्वविद्यालयों का कुलपति भी होता है। राज्यपाल आनंदीबेन ने लड़कियों को माताओं के रूप में उनकी संभावित भूमिका के लिए प्रशिक्षित करने का प्रस्ताव दिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना जीवन दलितोद्धार के लिए समर्पित कर दिया परंतु आज भी दलितों पर अत्याचार जारी हैं

अमृतसर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में स्वामी श्रद्धानन्द ने घोषणा की कि साढ़े छह करोड़ हरिजनों को अपने गले लगाओ नहीं तो वे ब्रिटिश रूपी जहाज के लंगर पर बैठ जाएंगे। स्वामी श्रद्धानन्द के भाषण के बाद ही दलितोथान और हरिजन उत्थान कांग्रेस का कार्यक्रम बना।

सवर्णों से पीड़ित दलित यदि धर्म परिवर्तन कर लेते तो भारत मुस्लिम राष्ट्र हो जाता। दलितों पर अत्याचार के बावजूद भी दलितों ने अपना धर्म नहीं छोड़ा परंतु सवर्ण हिन्दू अब भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा, दलितों पर अत्याचार जारी है। आर्य समाज को सारे देश में दलितोद्धार सम्मेलन आयोजित करने चाहिए।

राजस्थान में दलितों पर अत्याचार की घटनाएं आए दिन हो रही हैं। कुछ दिन पूर्व एक बैरवा महिला का शमशान घाट में सवर्णों ने दाह संस्कार नहीं करने दिया। इसके बाद नागौर और बाड़मेर में दलितों पर अत्याचार किए, शर्मसार करने वाली घटनाएं हुईं।

नागौर में दलित युवक को बंधक बना पीटा, ज्यादती की, वीडियो बनाया

अमानवीयता का वीडियो वायरल होने के 12 घंटे के अंदर सातों आरोपी गिरफ्तार

नागौर। नागौर में दो दलितों को बंधक बनाकर मारपीट करने और आपत्तिजनक वीडियो वायरल करने पर पुलिस ने 12 घंटे में ही सातों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस मुख्यालय से जांच के लिए पुलिस महानिरीक्षक, मानवाधिकार बिपिन कुमार पाण्डेय को नागौर भिजवाया गया है। क्राइम ब्रांच की हीनियस क्राइम यूनिट की निगरानी में जांच की जा रही है। वहीं, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट ने नागौर की घटना की जांच करने के लिए तीन सदस्यीय कमेटी गठित की है। इसमें सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल, संगठन महासचिव महेश शर्मा तथा देवली-उनियारा विधायक हरीश चन्द्र मीना शामिल हैं। उधर, मायावती ने ट्वीट किया कि नागौर में दलित भाइयों के उत्पीड़न का वायरल वीडियो विचलित करने वाला है। सरकार प्रभावी कार्रवाई करे। भाजपा के आईटी सेल के अमित मालवीय ने कहा कि जब से कांग्रेस सरकार बनी है दलितों पर अपराध बढ़ा है।

यूं समझे मामला : चोरी के आरोप पर हैवानियत

पीड़ित विसाराम व पन्नाराम के मुताबिक वे 16 फरवरी को बाइक सर्विस के लिए करीब 2.30 बजे एजेंसी पहुंचे। जैसे ही कैश काउन्टर के पास से निकले तो आरोपियों ने चोरी का आरोप लगाते हुए रबड़ की फैन बेल्ट व मुक्को से मारपीट की। फिर लोहे के पेचकश के आगे कपड़ा बांधकर विसाराम के गुप्तांगों में पेट्रोल डाला। घटना का वीडियो भी बनाते रहे। आरोपियों के मुताबिक-विसाराम गल्ले से 50 हजार रुपए निकालकर भागा था।

नागौर जैसी क्रूरता अब बाड़मेर में, 2 आरोपी गिरफ्तार

चोरी के शक में पीटा, प्राइवेट पार्ट में सरिया डाला, वीडियो वायरल हुआ तो खुला मामला

बाड़मेर। नागौर के बाद अब बाड़मेर में भी वैसी ही बर्बर घटना सामने आई है। बाड़मेर ग्रामीण थाना क्षेत्र के गांव तिरसिंगड़ी निवासी 22 वर्षीय एक युवक को पहले तो तीन युवकों ने भादरेस गांव के पास एक होटल पर बुलाया। इसके बाद कमरे में बंद कर दिया। जहां विशाला निवासी मोतीसिंह, भादरेस निवासी भरतसिंह व हिंगलाज आदि ने मोबाइल चोरी का आरोप लगाते हुए उसे लात-घूंसों और लोहे की चेन से जमकर पीटा। जबरन शराब पिलाई और प्राइवेट पार्ट में सरिया डाल दिया। आरोपियों ने पूरी वारदात का वीडियो भी बनाया और किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी देते हुए होटल से दूर पटक गए। 29 जनवरी को अपने साथ हुई बर्बरता से पीड़ित युवक इतना घबरा गया कि न तो परिजनों को कुछ बता पाया, न ही पुलिस तक जाने की हिम्मत जुटा पाया। इस बीच, घटना का वीडियो वायरल हो गया। इसके बाद गुरुवार शाम पीड़ित का बड़ा भाई थाने पहुंचा और मामला दर्ज कराया। पुलिस ने विशाला निवासी मोतीसिंह व मुकीम को गिरफ्तार किया है। आरोपी भरतसिंह व हिंगलाज की तलाश जारी है।

वीडियो में पीड़ित युवक बार-बार हाथ जोड़कर जान की भीख मांग रहा है। कह रहा है कि चार्जिंग पर लगे मोबाइल को ऊपर रख दिया था, चुराना होता तो साथ लेकर जाता

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

ऋषि दयानन्द के भक्त-
रा.ब. गोपालराव हरि देशमुख 'लोकहितवादी'

मराठी साहित्य में लोकहितवादी के नाम से प्रसिद्ध, महाराष्ट्र के प्रख्यात सुधारक तथा सार्वजनिक नेता गोपालराव हरि देशमुख के पूर्वज बाजीराव पेशवा (द्वितीय) के समान्त घराने के थे। इनका जन्म 18 फरवरी 1823 ई. को पूना में आ। आयु में ये स्वामी दयानन्द से एक वर्ष बड़े थे। मुंसिफ की परीक्षा पास कर देशमुख 1852 ई. में सरकारी सेवा में आये। 1855 में वे पदोन्नत हुए और पूना में सब असिस्टेंट इनाम कमिश्नर बनाये गये। 1862-63 में उन्होंने कार्यवाहक सहायक और सत्र न्यायाधीश का पद संभाला। 1865 में वे बम्बई के लघुवाद न्यायालय में कार्यवाहक न्यायाधीश रहे। 1867 में वे अहमदाबाद में वे इसी पद पर रहे। 1877 में उन्हें नासिक स्थानान्तरिक कर दिया गया, जहाँ वे सत्र न्यायाधीश के पद पर रहे। 1 सितम्बर 1897 को जब उन्होंने अवकाश ग्रहण किया तो उन्हें जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हुए दो वर्ष पूरे हो चुके थे।

सन् 1877 में दिल्ली दरबार के समय उन्हें 'राव बहादुर' की उपाधि प्रदान की गई। वे बम्बई विश्वविद्यालय में फैलो भी रहे तथा 1880 से 1882 तक बम्बई की धारासभा के सदस्य के रूप में कार्य किया। मराठी में उन्होंने उच्च कोटि का साहित्य लिखा है तथा मराठी साहित्य में निबन्ध विधा का समावेश करने का श्रेय उन्हें ही प्राप्त है। उन्होंने मराठी में लगभग 40 छोटे-बड़े ग्रन्थों की रचना की है। 1882 ई. में देशमुख ने लोकहितवादी नामक एक मासिक पत्र का प्रकाशन भी आरम्भ किया था। पं. गोपालराव देशमुख का स्वामी दयानन्द से परिचय उस समय हुआ जब वे अहमदाबाद में न्यायाधीश थे। उन्होंने स्वामीजी की वक्तृता सुनी और वे उनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए। कालान्तर में वे आर्य समाज बम्बई के वर्षों तक पदाधिकारी रहे। स्वामी दयानन्द को यजुर्वेद पर भाष्य लिखने की प्रेरणा देशमुख ने ही दी थी। यद्यपि स्वामीजी ने वेदभाष्य प्रणयन कार्य तो 1788 ई. में ही आरम्भ कर दिया तथा और भूमिका लेखन के पश्चात् वे ऋग्वेदभाष्य का आरम्भ भी कर चुके थे। इसी बीच देशमुख ने उन्हें यजुर्वेद पर भाष्य लिखने के लिए प्रेरित किया। स्वामीजी ने इसे तुरन्त स्वीकार किया और लाहौर से 6 जून 1877 को भेजे गये पत्र में उन्होंने देशमुख को सूचित किया कि वे शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य करने के लिए तैयार हैं। इसके लिए उन्हें दो पण्डितों की और आवश्यकता होगी। देशमुख को लिखे गये स्वामी दयानन्द के 12 पत्र पं. भगवद्दत्त ने स्व सम्पादित 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' में संगृहीत किये हैं। इन पत्रों से स्वामीजी का देशमुख के प्रति प्रेम, सौहार्द्र तथा सम्मान का भाव पदे-पदे व्यक्त होता है।

स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य का मुद्रण कार्य प्रारम्भ में बम्बई से कराया। इस कार्य का दायित्व उन्होंने हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के सुपुर्द किया था किन्तु वे चाहते थे कि वह यह महत्वपूर्ण कार्य देशमुख जैसे जिम्मेदार तथा अनुभवी व्यक्ति की देख-रेख में होता रहे। उनका यह विचार रावलपिण्डी से 6 दिसम्बर 1877 को भेजे गये देशमुख के नाम लिखे पत्र से ज्ञात होता है। स्वामी दयानन्द ने इन्हें

अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का सदस्य भी मनोनीत किया था। स्वामी जी के निधन के पश्चात् जब परोपकारिणी सभा की प्रथम बैठक अजमेर के मेयो कॉलेज स्थित मेवाड़ दरबार की कोठी में हुई, तो उसमें देशमुख भी उपस्थित थे। इसी अधिवेशन में उन्हें मेरठ के लाला रामशरणदास के दिवंगत हो जाने के कारण सभा का मंत्री चुना गया।

पं. गोपाराव हरि देशमुख ने स्वामीजी के निधन के पश्चात् उनके व्यक्तित्व, कार्य तथा विचारों का मूल्यांकनपरक एक विस्तृत निबन्ध मराठी भाषा में लिखा जो उनके 'लोकहितवादी' मासिक के जनवरी-फरवरी 1884 ई. के संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित हुआ। इस लेख का सारांश स्वामी दयानन्द के प्रथम हिन्दी जीवनी लेखक पं. गोपालराव हरि शर्मा (फर्रूखाबाद निवासी) ने दयानन्द दिग्विजयार्क (खण्ड 3) में उद्धृत किया है। लोकहितवादी लिखित यह महत्त्वपूर्ण निबन्ध अब प्रा. कुशलदेव वडवलकर द्वारा हिन्दी में अनूदित होकर पाठकों के समक्ष आ चुका है।

पं. गोपालराव देशमुख के पाँच पुत्र थे लक्ष्मणराव, मोरेश्वर, गणपतराव, रामचन्द्रराव और कृष्णराव। बड़े पुत्र लक्ष्मणराव स्वामीजी के जीवनकाल में सरकारी सेवा में प्रविष्ट हो चुके थे। जब स्वामी दयानन्द अजमेर से जोधपुर प्रस्थान करने की तैयारी में थे तो लक्ष्मणराव उनसे योग सीखने की इच्छा लेकर वहाँ आये। जब 29 मई 1883 को मध्याह्न की रेल से स्वामीजी ने अजमेर से जोधपुर के लिए प्रस्थान किया तो उन्हें स्टेशन पर विदाई देने के लिये आने वालों में श्री लक्ष्मणराव भी थे, जो उस समय खानदेश में सहायक जिलाधीश के पद पर थे। उनके दूसरे पुत्र व्यवसाय से चिकित्सक थे। डॉ. मोरेश्वर ने एम.डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वे आर्य समाज बम्बई के प्रधान भी रहे।

लोकहितवादी के अवशिष्ट तीन पुत्रों का निधन स्वयं उनके जीवनकाल में ही हो गया था। गणपतराव का 1883 में, रामचन्द्रराव का 1887 में तथा कृष्णराव का देहान्त लोकहितकावादी की मृत्यु से एक वर्ष पूर्व 1892 में हुआ। इन पारिवारिक क्लेशों को लोकहितवादी ने अत्यन्त शांत एवं स्थितप्रज्ञ के रूप में सहन किया। विषम परिस्थितियों में भी लोकहितकारी के अप्रतिम धैर्य तथा प्रशान्त मन:स्थिति का एक उदाहरण उनके जीवन में मिलता है। एक बार वे अपने पुत्र की अन्त्येष्टि करके लौटे ही थे कि स्वल्प काल के पश्चात् आर्य समाज के सम्बन्ध में बातचीत करने के लिए सुंदरलाल जी नामक एक सज्जन उनके समीप पहुँचे। अपने चेहरे पर किसी प्रकार के दु:ख वा शोक का चिह्न न लाते हुए उन्होंने सुंदरलालजी के साथ इच्छित विषय पर बातचीत भी की। परंतु जब घर के नौकर ने पुत्र के देहान्त की घटना सुंदरलालजी को बताई और यह भी कहा कि देशमुखजी तो स्वपुत्र को अग्नि के अर्पण करके ही अभी लौटे हैं, तो आगन्तुक ने क्षमा माँगते हुए कहा कि ऐसे दु:खद अवसर पर उनका सामाजिक कार्य हेतु उनके समीप आना ठीक नहीं था। इस पर परमस्थितप्रज्ञ लोकहितवादी ने कहा- ''समाज के कार्य के लिए अपने करने योग्य कार्य में उदासीनता दिखाना मेरे मत में अच्छा नहीं। सांसारिक घटनाओं से ऐसी बातचीत में दु:ख मानना उपयोगी नहीं, तथा उसी प्रकार यदि कोई उत्कृष्ट कार्यसिद्धि हुई हो तो उससे हर्षित होना भी उचित नहीं। मैंने अपनी ओर से अपने बच्चों को विद्यादान देने में कोई कमी नहीं रखी। फिर उनका अपना-अपना भाग्य उनके साथ है। यह संसार सुख-दु:खमय है। इसलिए उनके विषय में सुख-दु:ख मानने का कोई कारण नहीं है।''

लोकहितवादी के तीन पुत्रों तथा दो विवाहित पुत्रियों का निधन भी उनके सामने हो गया। उनकी पत्नी सौ. गोपिकाबाई 1885 ई. में परलोकवासिनी हुईं। 1893 में लोकहितवादी का निधन हो गया। डॉ. निर्मल कुमार फडकुले ने मराठी में 'लोकहितवादी काल आणि कर्तृत्य' शीर्षक ग्रन्थ लिख कर देशमुख के युग तथा कृतित्व का मूल्यांकन किया है।

॥ ओ३म् ॥
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक
5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।
सम्पादक मण्डल
घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M : 9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com
आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति,
आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित
-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

प्रेषित : .....

पंजीयन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20